7

''मेरे स्मरण के लिए''

मसीह की मृत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना अगर सुसमाचार के संदेश का मुख्य विषय बनाता है (1 कुरिन्थियों 15:3, 4), तो प्रभुभोज हमारी आराधना का मुख्य भाग होना चाहिए। प्रभु की मेज़ ही वह जगह है, जहां मसीहियों को एक-दूसरे के साथ और क्रूस की विजय में परमेश्वर के साथ बार-बार भाग लेने के लिए बुलाया जाता है। मसीही आराधना में प्रभु भोज का मुख्य होना पुराने नियम में इसकी गहरी जड़ों का संकेत है।

तीन साल तक यीशु अपने चेलों को अपनी विदाई के लिए तैयार करता रहा था। उसने उन्हें कम से कम तीन बार बताया था कि वह प्रधानयाजकों और शास्त्रियों के हाथ क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए दिया जाएगा और तीसरे दिन फिर जी उठेगा (मत्ती 16:21; 17:22, 23; 20:18, 19)। एक अन्तिम भोज उनके साथ खाएगा। यह अवसर वार्षिक फसह यानी यहूदियों का पर्व था, जो मिस्र की दासता से उनके पूर्वजों के निकलने के समय से मनाया जा रहा था। जिस रात उन्हें निकाला गया था, परमेश्वर ने उन्हें एक मेमना मारकर उसका लहू अपने घरों की चौखटों पर लगाने को कहा था। यह छुटकारे का लहू था। जब मिस्र के पहिलौठों के प्राण लेने अर्थात फिरौन और उसके लोगों पर अन्तिम विपत्ति लाने के लिए परमेश्वर देश में से गुजरा तो लहू के निशान वाली चौखटों वाले घरों को छोड़ दिया गया था। परमेश्वर ने उन्हें इसके बाद मिस्र की दासता से उनके निकाले जाने को याद करने के लिए फसह का पर्व मनाने की आज्ञा दी थी (निर्गमन 12:1-13:10)।

फसह के भोज में मेमने का बलिदान, जिसे भूनकर पूरे का पूरा खाना होता था, अखमीरी रोटी, कड़वी भाजी और दाख रस होता था। अखमीरी रोटी उन्हें उस फुर्ती को याद दिलाने के लिए थी, जो मिस्र से निकलते समय की गई थी, जिसमें उनके पास अपनी रोटी को खमीरा करने का समय नहीं था। कड़वी भाजी उन्हें अपनी दासता की कड़वाहट का स्मरण कराती थी। अपने चेलों के साथ इस यादगारी भोज में भाग लेते हुए यीशु ने फसह के भोज की दो चीजें लेकर उन्हें एक नया अर्थ दे दिया, जिसकी चेलों को उस समय तो नहीं पर बाद में समझ आई:

> जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो, खाओ; यह मेरी देह है। फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है (मत्ती 26:26-28)।

यीशु मसीहा द्वारा दिए जाने वाले छुटकारे के बलिदान का मेमना बना। उसने हमें पाप और मृत्यु की दासता से छुड़ाने के लिए हमारे पाप के कर्ज़ की कीमत के रूप में अपनी देह और लहू दे दिया। साधारण सी चीज़ें जो उसने चुनीं वे उसके बलिदान को बिल्कुल सही दर्शाती हैं। यहूदी

लोग मिस्र की दासता से अपने पूर्वजों के छुटकारे को याद करने के लिए फसह मनाया करते थे। मसीही लोग पाप से अपने छुटकारे को मनाने के लिए प्रभु की मेज़ के पास इकट्ठे होते हैं।

राजा के लिए एक भोज

यीशु की मृत्यु चेलों के मिलकर भोज करने का अन्त नहीं था बल्कि उसके अर्थात राजा की दावत मनाने का आरम्भ था। सम्भवतया उन्हें यह समझने में दिक्कत आई होगी कि उसने आगे क्या कहा: ''मैं तुम से कहता हूं कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं'' (मत्ती 26:29), या जैसा कि लूका ने कहा है, ''जब तक परमेश्वर का राज्य न आए'' (लूका 22:18ख)। उसने उनके साथ दोबारा कभी फसह का भोज नहीं खाना था। परन्तु राज्य के आने पर उसने उनके साथ एक नया भोज खाना और पीना था। उसने प्रतिज्ञा की थी कि राज्य उनके जीवनकाल में आ जाएगा (मरकुस 9:1)। उसने पतरस को राज्य के द्वार खोलने का अधिकार देने की प्रतिज्ञा की थी, जिसे उसने कलीसिया भी कहा (मत्ती 16:18, 19)। पतरस ने यीशु के जी उठने के बाद सबसे पहले पिन्तेकुस्त के दिन राज्य की कुंजियों का इस्तेमाल किया। उसने सबसे पहला सुसमाचार संदेश सुनाया, जिससे मसीहियत में सबसे पहले लोग परिवर्तित हुए (प्रेरितों 2:14-40)। इन सब परिवर्तितों को पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में डुबकी दी गई थी (प्रेरितों 2:38) और कलीसिया में मिलाया गया (प्रेरितों 2:47; KJV)। कलीसिया पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य था। यीशु ने यह भी प्रतिज्ञा की थी कि जहां दो या तीन उसके नाम से इकट्ठा होंगे वह उनके साथ होगा (मत्ती 18:20)। ''मैं तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया पीऊंगा,'' कहकर यीशु अपने जी उठने के बाद प्रभु भोज में भाग लेने के लिए उनके इकट्ठा होने पर उनके बीच में होने की प्रतिज्ञा कर रहा था। उन्होंने उसका राज्य अर्थात उसके पिता का राज्य बनाना था।

प्रभुभोज मसीहा के होने वाले राजा तथा उसकी प्रजा के लिए उपयुक्त पर्व है। यह पर्व उन्हें एक दूसरे के साथ और राजा के साथ जोड़ता है। प्रभु की मेज के गिर्द का यह पर्व ''मसीह के लहू की सहभागिता'' और ''मसीह की देह की सहभागिता'' है (1 कुरिन्थियों 10:16)। हम पढ़ते हैं, ''इसलिए, कि एक ही रोटी है सो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं: क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं'' (1 कुरिन्थियों 10:17)। केवल वही लोग जो राजा के बलिदान के लहू से छुड़ाए गए हैं, उसके भोज में उसके सामने आ सकते हैं। उन्हें इस दावत में केवल एक उद्देश्य अर्थात पाप पर उन्हें विजय दिलाने वाली घटना में उसके और एक-दूसरे के साथ सहभागिता करने के लिए बुलाया जाता है।

प्रभु के दिन का भोज

अपने आरम्भ से ही मसीही लोग रोटी तोड़ने के लिए सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होते थे (प्रेरितों 2:42; 20:7)। ''रोटी तोड़ना'' ऐसा शब्द था, जिसका इस्तेमाल आमतौर पर प्रभुभोज लेने के लिए किया जाता था। 1 कुरिन्थियों 10:16 में जब पौलुस ने ''रोटी जिसे हम तोड़ते हैं'' कहा तो वह प्रभु भोज के भाग की बात कर रहा था। कुरिन्थुस की कलीसिया में प्रभु भोज में आई त्रुटियों को दूर करने के लिए पौलुस ने यह स्पष्ट किया कि उन्हें प्रभुभोज खाने के लिए इकट्ठे होना

चाहिए (1 कुरिन्थियों 11:20)। पहले वे ऐसा नहीं कर रहे थे, परन्तु उन्हें जो करना चाहिए था, वह यही था। ''आरम्भिक कलीसिया की सहमति इस व्यवहार की पुष्टि करती है। बाइबल में या आरम्भिक कलीसिया के इतिहास में कोई प्रमाण नहीं मिलता, जो इस पवित्र भोज को मनाने के लिए सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होने के मसीही लोगों के व्यवहार को चुनौती देता हो।''[1]

डेविड रोपर ने पाया कि ''यहूदी लोग भौतिक सृष्टि के स्मरण के लिए सातवें दिन को मनाते थे (निर्गमन 20:8-11) जबकि मसीही लोग मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के स्मरण के लिए पहले दिन को मनाते हैं (1 कुरिन्थियों 11:23-25) जो 'एक *नई सृष्टि*' को सम्भव बनाता है (गलातियों 6:15)।''[2]

एक यादगार

सुसमाचार के लूका के वृत्तांत में, अपने यादगारी भोज की स्थापना करने पर यीशु ने अपने चेलों से कहा था, ''मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' (लूका 22:19ख)। यह पूछना हल्की बात है कि ''वह हमसे असल में याद रखने को क्या चाहता है?'' मुझे नहीं लगता! यह कहना आम है कि ''वह चाहता है कि हम उसे याद रखें।'' उसके मेज़ के गिर्द एक के बाद एक हफ्ते इकट्ठा होने पर वह क्या चाहता है कि हम याद रखें? गम्भीर मसीही व्यक्ति के क्रूस पर ध्यान करने पर उसके मन में विचारों और भावनाओं की कशमकश होने लगती है। उसे शोक और आनन्द दोनों का अनुभव होता है। क्रूस पर यीशु के बलिदान पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान करने पर आंसू गिर सकते हैं। **आंसू शोक और आनन्द दोनों से प्रेरित हो सकते हैं।** बेशक मसीही लोगों को पश्चाताप का अहसास कराने का अच्छा कारण है कि हमारे छुटकारे के लिए इतनी बड़ी कीमत चुकाई गई है; फिर भी हमारे पास यह आनन्द करने का अच्छा कारण है कि यीशु वह कीमत चुकाने को तैयार था। दोनों ही भावनाएं सही हैं। जो बात मेल नहीं खाती वह सूखी आंखों से प्रभु के मेज़ के पास आना या इकट्ठा होने पर ''प्रभु की मृत्यु का, जब तक वह न आए, प्रचार'' करने की भावना में थोड़ा परिवर्तन है (1 कुरिन्थियों 11:26ख)।

स्पष्ट है कि यीशु चाहता है कि हम उसको न केवल उसके लिए याद रखें जो उसने क्रूस पर हमारे लिए किया था, बल्कि हमारे राजा, महायाजक और मध्यस्थ के रूप में जो कुछ इस समय कर रहा है, उसे भी याद रखें (इब्रानियों 4:15; 1 तीमुथियुस 2:5, 6)। वह हमसे यह भी याद रखने की उम्मीद करता है कि उसने भविष्य में क्या प्रतिज्ञा की है, जिसकी पुष्टि उसने अपने जी उठने के द्वारा कर दी: ''यदि हम उसके साथ मर गए हैं तो उसके साथ जीएंगे भी। यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज भी करेंगे'' (2 तीमुथियुस 2:11ख, 12)।

प्रभु की मेज़ के निकट आने पर बेशक गम्भीर और ध्यानमगन होना उपयुक्त है, परन्तु भोज में जश्न भी तो होता है। मेरे पिता की मृत्यु के बाद, परिवार जब छुट्टियों या किसी और समय में इकट्ठा होता तो हमें यह दर्दनाक बात ध्यान में तो रहती थी कि अब वह हमारे बीच में नहीं है। मां उनके जीवित रहते समय परिवार की खुशियों को याद कर उदास हो जाती। कई बार वह कहती, ''तुम्हारे पापा होते तो उन्हें कितना अच्छा लगता।'' इसके साथ ही वह इस बात से खुश होती कि वह अपने बच्चों के साथ होकर पिता जी की उपस्थिति को महसूस करती है। एक अर्थ में वह हमारे साथ थे, क्योंकि वह हम में से हर एक का भाग थे। तीन बच्चों की शक्ल उनसे मिलती थी

और मेरी मां के मन में अभी भी उनकी यादें थीं।

एक अर्थ में जब हम यीशु को याद करने के लिए इकट्ठा होते हैं तो क्रूस केन्द्र में होता है, क्योंकि यहीं पर उसने हमें छुड़ाने के लिए हमारे पाप का कर्ज़ चुकाया। रोटी और दाख का रस हमें उसकी बलिदान की गई देह और लहू का स्मरण कराते हैं। वह बलिदान का हमारा मेमना है। जैसे उसने रोटी और दाखरस के लिए धन्यवाद दिया वैसे ही हम मिलकर धन्यवाद देकर खाते हैं। हम अपने छुटकारे को मनाते हैं। उसके साथ और एक दूसरे के साथ सहभागिता रखते हुए, एक देह के अंगों के रूप में हम अपनी एकता को फिर से दोहराते और एक दूसरे का समर्थन करते हैं। हम अपने बीच में उसकी उपस्थिति को महसूस करते और उस समय की प्रतीक्षा करते हैं जब या तो वह हमें मुर्दों में से जिला देगा या हमारी शारीरिक देहों को नई आत्मिक देहों में बदलकर हमें अनन्तकाल के लिए अपने साथ ले जाएगा। हमें आनन्द यह जानकर मिलता है कि हम पहले मरें या वह हमारे मरने से पहले आ जाए, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ेगा। यदि हम पहले मर जाते हैं तो वह हमें जिला देगा (यूहन्ना 5:28, 29; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16)। यदि वह पहले आ जाता है तो वह हमें बदल देगा (1 कुरिन्थियों 15:52-57)।

भक्ति के साथ जश्न

मसीही लोगों के पास जश्न मनाने के लिए बहुत कुछ है। हम देह के रूप में जिसमें मसीह हमारे बीच में है, अपनी एकता का जश्न मनाते हैं। हम अपने परिवार का जश्न मनाते हैं। हम अपनी विजयों का जश्न मनाते हैं, जो क्रूस पर पाप के ऊपर हमारी सबकी विजय की नहीं बल्कि प्रतिदिन उसके साथ चलते हुए हमारी अपनी विजयें भी हैं। हम जी उठने में अपनी आशा का जश्न मनाते हैं जो मृत्यु से हमारा छुटकारा है। हम उसके वापस आने की प्रतिज्ञा का जश्न मनाते हैं। प्रभु भोज में भाग लेकर क्रूस की ओर वापस जाना विलाप नहीं है। यीशु ने ऐसा कभी नहीं चाहा। अपना भोज देने का उसका अर्थ हमारे लिए बार-बार वापस आने का समय और स्थान बनाने और अपने छुटकारे के स्रोत को याद रखने के लिए है। वह हमसे न केवल यह चाहता है कि हम इस बात को याद रखें कि उसका मरना आवश्यक क्यों था, बल्कि यह भी याद रखवाना चाहता है कि पाप से हमारी मृत्यु क्यों आवश्यक है। यह याद रखते हुए कि पाप से हमारी मृत्यु क्रूस पर हो गई, उतना ही महत्वपूर्ण है जितना यह याद रखना कि वहां उसकी मृत्यु हुई थी। ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है'' (1 कुरिन्थियों 15:57)।

जश्न मनाएं पर इस बात को समझें कि परमेश्वर पवित्र और निरोल है जबकि हम पापी और निर्बल हैं। वह हमारे जैसा नहीं है पर चाहता है कि हम उसके जैसे बन जाएं। प्रभु का भोज हमारे लिए भक्ति और आनन्द दोनों का अभ्यास करने की बिल्कुल सही जगह देता है। हमें यादगारी भोज के पास उस संकेत के रूप में आना चाहिए जो क्रूस पर हमारे लिए उसकी मृत्यु के साथ-साथ क्रूस और खाली कब्र के बीच में हमारे लिए पाई गई उसकी विजय का जश्न मनाने की अनुमति देता है। इस प्रकार यह मेज़ आराधना का केन्द्र-बिन्दु यानी वह प्वाइंट बन जाता है, जहां हमारे गीत, प्रार्थनाएं और वचन पर मनन सप्ताह के पहले दिन के होते हैं। वहां मैं आश्चर्य, भय और अचम्भे में खामोशी से ध्यान कर सकता हूं कि मेरे लिए यीशु ने इतनी बड़ी कीमत चुकाई

और साथ ही उस बात के लिए जो उसने की है, जश्न मना सकता हूं। जब भी मैं प्रभु की मेज़ के पास आता हूं, मुझे यह पहचानने के लिए कहा जाता है कि यीशु ने क्रूस पर वह किया जो उसे करना था और ऐसा केवल वही कर सकता था क्योंकि उसके जैसा और कोई नहीं। कई बार मेरी आंखों से छलकते आंसू आनन्द और शोक दोनों का मिश्रण होते हैं। मैं चकित होता हूं कि मुझे केवल पिता के पास पहुंचाया ही नहीं जाता बल्कि उसके पास बुलाया भी जाता है। उसके लिए मैं ''उसके नाम की स्तुति और महिमा'' ही कर सकता हूं। प्रभु के मेज़ पर सहभागिता एक जश्न है, पर यह उसकी शान में भक्ति से झुकने का समय भी है। ''क्योंकि यही परमेश्वर के स्वभाव की तारीफ करता है और वह कारण दिखाता है, जिसके लिए परमेश्वर हमारी आराधना के योग्य है।''[3]

सारांश

प्रभु के भोज की सामर्थ जादू के तत्वों में नहीं बल्कि स्तुति में है। भोज दो मसीही प्रतीकों में से एक है, जो मसीह के क्रूस पर हमारा ध्यान केन्द्रित करते हैं। दूसरा बपतिस्मा अर्थात मसीह के साथ हमारे मारे जाने, गाड़े जाने और जी उठने के प्रतीक के लिए पानी में डुबकी है। ये प्रतीक उस घटना में भाग लेने का माध्यम हैं, जो पहले ही बीत चुकी है। उस यादगार में भाग लेना उस घटना को जीवित रखता और हमें अपने अनुभव में इस पर काम करने देता है। बपतिस्मा मसीह के साथ मारे जाने, गाड़े जाने और जी उठने में एक बार भाग लेना है। हर सप्ताह प्रभु भोज में भाग लेकर हम उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने में सहभागी होते हैं। उस घटना को अपने मनों में सजीव और सक्रिय रखना कठिन काम है। हमें परिवार के रूप में इकट्ठे होकर और यीशु के साथ लगातार रहकर उसके बलिदान और विजय को फिर से जीने से सामर्थ मिलती है।

पारिवारिक संगति का विशेष महत्व है, चाहे यह सांसारिक परिवार ही क्यों न हो। कलीसिया एक दूसरे तथा परमेश्वर के साथ उनकी वाचा के कारण एक परिवार है। यीशु ने अपने लहू को ''वाचा का लहू'' (मत्ती 26:28) कहा। वाचा के इस विशेष भोजन को एक-दूसरे के साथ खाना अपनी मर्जी से कभी भी नहीं हो सकता, न ही हमें इसमें से गुजरने के लिए किसी प्रकार की इच्छा होनी चाहिए। यह वह घटना है, जो हमें इकट्ठे रखती और एक देह के रूप में मिलाती है। प्रभु का भोज केवल संस्कार नहीं है, जिसे किया जाना आवश्यक है, बल्कि वह भोज है जो हमें इकट्ठे करके परमेश्वर तथा एक-दूसरे के साथ सहभागिता करने के योग्य बनाता है।

इसलिए प्रभु के भोज को प्रार्थना और स्तुति की तरह ही हमारी साप्ताहिक आराधना सभा का भाग होना चाहिए। मसीह की मृत्यु हमारी आराधना का केन्द्र होनी चाहिए। परमेश्वर ने हर सप्ताह हमें क्रूस के निकट लाने के लिए जहां हमारा छुटकारा हुआ था और जहां हमारी विजय पर मुहर की गई, हमारे लिए प्रभु भोज ठहराया।

टिप्पणियां

[1]जिम्मी जिवीडन, *मोर दैन ए फीलिंग: वरशिप दैट प्लीज़स गॉड* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1999), 105. [2]डेविट रोपर, ''ए फेमिली पोटीरेट,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे, एक्ट्स 8* (अप्रैल 1996): 38. [3]रॉबर्ट ई. वैबर, *वरशिप इज़ ए वर्ब: एट प्रिंसिपल्स फ़ॉर ट्रांसफोरमिंग वरशिप* (पीबॉडी, मेसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1999), 16.